अध्याय 10 — पहला संदेह, पहला भय

पिछली मुलाकात में युवराज की कही बात आरव भूला नहीं था। उसने अपने मित्रों को सावधान रहने के लिए कहा था, पर यह भी स्पष्ट कर दिया था कि वे किसी के भय से अपना काम नहीं रोकेंगे। प्रतियोगिता की प्रारंभिक जाँच उसी दिन होनी थी। चारों अपने उपकरणों के साथ सभागार पहुँचे, और युवराज अपने अलग समूह के साथ कुछ दूरी पर बैठ गया। उसकी निगाह आरव पर थी। उसे अभी तक यह पता नहीं था कि जिस मित्रता को वह आरव की कमजोरी समझ रहा है, उसी के भीतर एक ऐसा रहस्य छिपा है जो उसके सारे अनुमान बदल देगा।

प्रस्तुति आरंभ हुई। आरव ने कम खर्च में शिक्षा उपलब्ध कराने की योजना समझाई, काव्या ने उसके उपयोग बताए और ईशा ने परीक्षण के परिणाम रखे। अंत में वीर ने उपकरण चालू किया। स्क्रीन पर कुछ संकेत उभरे, फिर अचानक सब बुझ गया। वीर ने तार और नियंत्रण प्रणाली जाँची। समय समाप्त हो रहा था। उसने साथियों को थोड़ा पीछे हटने को कहा, उपकरण के पास झुका और एक क्षण के लिए अपनी हथेली उसके पीछे रख दी। अगले ही पल स्क्रीन जल उठी। मशीन पहले से अधिक स्थिरता से चलने लगी। निर्णायकों ने प्रदर्शन पूरा करने दिया और दोनों समूह अगले चरण के लिए चुन लिए गए।

“यह किया कैसे?” ईशा ने मंच से उतरते ही पूछा।

“तुम लोगों ने मुझे इतना डराया कि मशीन भी डर गई,” वीर ने हँसकर कहा।

काव्या मुस्कुराई, पर आरव कुछ क्षण शांत रहा। उसने बंद उपकरण की स्थिति देखी थी। उसे समझ नहीं आया कि बिना कोई पुर्जा बदले वह अचानक कैसे चल पड़ा। फिर उसने स्वयं को टोका। वीर उपकरणों के साथ काम करता रहा था; संभव है उसे कोई साधारण खराबी समझ आ गई हो।

सभागार के दूसरे छोर पर युवराज ने भी वही दृश्य देखा था।

“समर, मशीन बंद थी न?” उसने पूछा।

“हाँ, फिर चल गई। अब इसमें क्या रहस्य है?”

“वीर ने उसे छुआ तक नहीं था, कम से कम उस तरह नहीं जैसे कोई मशीन ठीक करता है।”

समर ने कंधे उचकाए। “तो तुम कहना क्या चाहते हो?”

युवराज ने उत्तर नहीं दिया। उसके मन में एक विचार आया था जिसे वह स्वयं भी स्वीकार नहीं करना चाहता था—क्या वीर ने शक्ति का उपयोग किया?

उसने तुरंत उस संभावना को झटक दिया। कृत्रिम शक्तियाँ सस्ती नहीं थीं। कॉलेज में किसी के पास ऐसी शक्ति होती तो उसकी चर्चा बहुत पहले फैल चुकी होती। वीर तो चाय के पैसों पर मजाक करने वाला साधारण लड़का था। फिर भी युवराज की आँखों से वह एक क्षण नहीं हट रहा था जिसमें बंद मशीन अचानक चल पड़ी थी।

दोपहर में चारों मित्र कैंटीन की मेज पर बैठे थे। प्रतियोगिता का परिणाम उनके पक्ष में था, इसलिए वीर ने घोषणा की कि आज चाय उसकी ओर से होगी।

“पिछली बार भी यही कहा था,” ईशा बोली।

“इस बार सच में। बस पैसे आरव दे देगा, मैं उसका नाम ले लूँगा।”

काव्या हँस पड़ी। “तुम्हारी उदारता अद्भुत है।”

आरव ने चाय का कप उठाया। “वीर, मशीन में क्या खराबी थी?”

वीर की उँगलियाँ कप पर एक पल ठहर गईं।

“छोटी-सी गड़बड़ थी।”

“किस हिस्से में?”

“तुम्हें अब मेरे काम की जाँच करनी है?” वीर ने मुस्कुराते हुए कहा। “अरे, चल गई न! अगली बार पहले से ठीक रखूँगा।”

आरव ने बात वहीं छोड़ दी। उसे मित्र पर विश्वास था। लेकिन ईशा ने देखा कि प्रश्न टालते समय वीर ने उसकी ओर नहीं देखा।

कैंटीन के दूसरी ओर युवराज बैठा था। उसने चारों को हँसते देखा। पहले उसे उनकी प्रसन्नता खलती थी; आज उसके मन में कुछ और चल रहा था।

“क्या देख रहे हो?” समर ने पूछा।

“एक प्रयोग के बारे में सोच रहा हूँ।”

“कॉलेज वाला?”

“नहीं। ऐसा प्रयोग जिसका परिणाम कोई झूठ बोलकर नहीं बदल सकेगा।”

समर ने प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा, पर युवराज उठकर चला गया।

अगली कक्षा समाप्त होने पर गलियारे में विद्यार्थियों की भीड़ थी। आरव और काव्या आगे निकल गए थे। ईशा पुस्तकालय से एक पुस्तक लेने के लिए मुड़ी और वीर उसके पास रुक गया।

“जल्दी आना,” वीर ने कहा। “वरना आरव फिर कहेगा कि समय की कीमत समझो।”

“तुम्हें तो वह बात रोज सुननी चाहिए।”

ईशा भीतर चली गई। वीर गलियारे की दीवार के पास खड़ा मोबाइल देख रहा था।

कुछ दूरी पर युवराज एक खंभे की ओट में था। उसकी कलाई पर लगा विद्युत-शक्ति नियंत्रक सक्रिय था। समर ने पहले भी इसी प्रकार की खरीदी हुई शक्ति का प्रदर्शन किया था; युवराज के पास उसका अपना, अधिक शक्तिशाली

उपकरण था। वह जानता था कि इस स्तर का प्रहार किसी सामान्य व्यक्ति की त्वचा जला सकता है। उसने फिर भी शक्ति बढ़ाई।

“यदि तुम सचमुच साधारण हो, तो अभी पता चल जाएगा,” उसने बुदबुदाया।

नीली चमक का एक तेज झटका वीर की ओर गया। आसपास की भीड़ को बस क्षणिक चटखने की आवाज सुनाई दी। वीर ने प्रहार महसूस किया और उसी क्षण उसकी आँखें फैल गईं। उसे चोट नहीं पहुँची थी, पर वह समझ गया कि यह कोई ढीला तार नहीं था।

वह तुरंत लड़खड़ाकर नीचे बैठ गया।

“आह!”

ईशा पुस्तकालय के दरवाजे से दौड़ती हुई लौटी। “वीर! क्या हुआ?”

“शायद बिजली का झटका...” वीर ने कलाई पकड़ते हुए कहा।

आरव और काव्या भी लौट आए। आरव घुटनों के बल बैठ गया। “कहाँ लगा?”

“हाथ में। अचानक।”

काव्या ने चारों ओर देखा। “यहाँ तो कोई खुला तार नहीं है।”

ईशा का चेहरा उतर गया। “चलो, चिकित्सा कक्ष चलते हैं।”

वीर ने उठने की कोशिश की। “अब ठीक लग रहा है।”

“जाँच कराए बिना नहीं,” आरव ने कहा।

युवराज दूर खड़ा देख रहा था। पहले उसे लगा उसका अनुमान गलत निकला। वीर सचमुच गिर पड़ा था। लेकिन जब आरव ने उसकी बाँह उठाई, युवराज की निगाह वहाँ टिक गई। त्वचा पर जलने का निशान नहीं था। लालिमा तक नहीं।

उसने अपने नियंत्रक की छोटी स्क्रीन देखी। प्रहार लक्ष्य तक पहुँचा था; उपकरण में कोई त्रुटि दर्ज नहीं हुई थी।

“तो फिर यह गिरा क्यों?” उसने मन में पूछा।

अचानक उत्तर उसके सामने था।

“क्योंकि इसे सबके सामने घायल दिखना था।”

उसकी साँस कुछ तेज हो गई। वह अब तक आरव को परखना चाहता था। लेकिन जिस लड़के को वह आरव का सबसे हल्का-फुल्का मित्र समझता था, वही उसके सामने एक पहेली बन गया था।

चिकित्सा कक्ष में वीर की जाँच हुई। कर्मचारी ने हाथ और कलाई देखी, फिर पूछा, “तुम्हें यकीन है कि बिजली का झटका था?”

“ऐसा ही लगा,” वीर ने उत्तर दिया।

“त्वचा पर कोई निशान नहीं है। अभी कोई स्पष्ट चोट नहीं दिखती। फिर भी यदि चक्कर, कमजोरी या दर्द हो तो तुरंत बताना।”

ईशा ने राहत की साँस ली। “आज घर जाकर आराम करना।”

“मैं तो सोच रहा था कि तुम सब मुझे उठाकर घर तक छोड़ोगे,” वीर ने कहा।

“ज्यादा बोलोगे तो यहीं छोड़ देंगे,” काव्या ने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

सब हँस दिए, लेकिन आरव ने धीरे से पूछा, “वीर, झटका किस दिशा से आया था?”

“शायद पीछे से। सब इतनी जल्दी हुआ कि समझ नहीं पाया।”

“यदि कुछ याद आए, बताना।”

वीर ने सिर हिला दिया। उसने झूठ बोलना पसंद नहीं किया, पर सच कहने के लिए वह अभी तैयार भी नहीं था। उसे बस इतना पता था कि किसी ने जानबूझकर हमला किया था। और यदि प्रहार ईशा पर हुआ होता तो परिणाम अलग हो सकता था।

उधर युवराज अपने कमरे में बैठा दिन की घटना का विवरण देख रहा था। शक्ति-नियंत्रक ने लक्ष्य तक ऊर्जा पहुँचने की पुष्टि की थी। वह बार-बार उसी बात पर लौटता—इतनी बिजली के बाद वीर की त्वचा सुरक्षित कैसे रही?

उसने समर को फोन किया। "वीर के परिवार के बारे में जानते हो?"

"इतना नहीं। क्यों?"

"बस पूछ रहा था।"

"तुम्हें आरव से परेशानी थी। अब वीर ने क्या किया?"

"कुछ नहीं," युवराज ने जल्दी से कहा और फोन काट दिया।

वह किसी को नहीं बताना चाहता था कि एक साधारण लड़के ने उसे उलझन में डाल दिया है। उसके पिता के व्यापार में शक्तियों की कीमत और क्षमता की चर्चा सामान्य बात थी। इतनी महँगी शक्ति किसी ने खरीद रखी हो और वर्षों तक छिपाए, यह उसे अजीब लगा। लेकिन उससे भी अजीब बात यह थी कि वीर ने अपनी रक्षा की थी—और किसी को भनक नहीं लगने दी।

युवराज ने घड़ी देखी। शाम ढल रही थी।

"दिन में तुमने अभिनय किया," उसने धीरे से कहा। "रात में देखते हैं।"

रात लगभग नौ बजे वीर एक परिचित के घर से पुस्तकें लेकर लौट रहा था। सड़क के एक ओर बंद गोदाम थे और दूसरी ओर खाली मैदान। कुछ दूर तक पीली सड़क-बत्तियाँ जल रही थीं।

ईशा का संदेश आया—"घर पहुँचे?"

वीर ने लिखा—"बस पहुँचने वाला हूँ। इतनी निगरानी तो मेरे घर वाले भी नहीं करते।"

उत्तर आया—"तो अब कर रहे हैं।"

वह मुस्कुराया और मोबाइल जेब में रख लिया। तभी पीछे किसी कार के रुकने की आवाज हुई।

“वीर!”

उसने पलटकर देखा। युवराज कार से उतर रहा था।

“तुम यहाँ?”

“तुमसे बात करनी है।”

“कल कॉलेज में कर लेना। देर हो रही है।”

युवराज आगे आया। “आज तुम्हें बिजली का झटका लगा था?”

वीर के चेहरे की मुस्कान हल्की पड़ गई। “हाँ। क्यों?”

“दर्द हुआ था?”

“थोड़ा। तुम्हें मेरी चिंता कब से होने लगी?”

“जब से तुमने सबके सामने चोट का अभिनय किया।”

वीर चुप हो गया। उसने युवराज की कलाई पर लगे उपकरण को देखा।

“तो वह हमला तुमने किया था?”

युवराज ने सीधा उत्तर नहीं दिया। “मैं जानना चाहता हूँ कि तुम हो कौन।”

“वही वीर, जिसे तुम रोज कॉलेज में देखते हो।”

“साधारण आदमी पर उस प्रहार का असर होता। तुम्हारे हाथ पर खरोंच तक नहीं थी।”

वीर ने धीमे स्वर में कहा, “तुमने भीड़ के बीच बिजली छोड़ी थी? वहाँ ईशा थी। दूसरे विद्यार्थी थे। किसी को गंभीर चोट लग सकती थी।”

“मुझे उपदेश मत दो। बताओ, कौन-सी शक्ति खरीदी है?”

“मैंने तुमसे कोई सवाल नहीं पूछा था। रास्ता छोड़ो।”

युवराज का अहंकार भड़क उठा। “तो एक बार फिर देखते हैं।”

वीर ने पहली बार कठोर स्वर में कहा, “युवराज, मत करना।”

युवराज ने नियंत्रण सक्रिय कर दिया।

नीली बिजली अँधेरे को चीरती हुई वीर की ओर बढ़ी। इस बार वहाँ कोई मित्र नहीं था जिसके सामने वीर को गिरने का अभिनय करना पड़ता। उसने अपना हाथ सामने किया। चमक उसके पास पहुँची, क्षणभर हथेली के आसपास काँपी और बुझ गई।

वीर वहीं खड़ा रहा।

युवराज की आँखें फैल गईं। उसने नियंत्रक देखा। प्रहार सफल दर्ज था।

“तुमने इसे कैसे रोका?”

“बस करो,” वीर ने कहा।

“नहीं! यह संभव नहीं है।”

युवराज ने शक्ति का स्तर बढ़ाया। दूसरा प्रहार पहले से तेज था। सड़क के किनारे पड़े लोहे के एक टुकड़े से चिंगारी निकली, पर वीर पर उसका भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह अपनी जगह से हिला तक नहीं।

युवराज पीछे हट गया। उसने अपने जीवन में महँगे सुरक्षा-कवच देखे थे, पर वीर के पास न कोई कवच था, न कोई दिखाई देने वाला उपकरण।

“तुमने शक्ति कहाँ से खरीदी?”

वीर ने उत्तर नहीं दिया।

“तुम सुन रहे हो? किस कंपनी से?”

“तुम्हें यह जानने की आवश्यकता नहीं।”

युवराज को यह उत्तर अपमान जैसा लगा। वह आगे बढ़ा और वीर को पकड़कर झकझोरने लगा। वीर ने उसकी कलाई पकड़ ली। युवराज ने छुड़ाने की कोशिश की, फिर अपने नियंत्रक से पास से प्रहार करना चाहा। वीर ने उसका हाथ एक ओर मोड़ा और एक तेज धक्के से उसे पीछे कर दिया।

युवराज लड़खड़ाकर सड़क के किनारे गिर पड़ा। उसका नियंत्रक हाथ से छूट गया।

वह कुछ क्षण वहीं पड़ा रहा। शरीर पर लगी चोट से अधिक उसे यह बात विचलित कर रही थी कि वीर ने उसे सँभलने तक का अवसर नहीं दिया। उसने ऊपर देखा। वीर उसके सामने खड़ा था। उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान नहीं थी।

"तुम पागल हो गए हो?" युवराज ने कहा, लेकिन आवाज में पहले जैसी कठोरता नहीं थी।

"मैंने तुम्हें दो बार रोका था," वीर ने उत्तर दिया। "तुम नहीं रुके।"

युवराज उठकर पीछे हटा। "तुम जानते नहीं कि मेरे पिता कौन हैं।"

"जानता हूँ। लेकिन उनके नाम से तुम्हें किसी को जलाने का अधिकार नहीं मिल जाता।"

वीर ने नीचे पड़ा नियंत्रक उठाया। युवराज एक पल को सहम गया, मानो अब वही उपकरण उसके विरुद्ध इस्तेमाल होगा। लेकिन वीर ने उसे उसकी ओर बढ़ा दिया।

"इसे रखो। किसी को चोट पहुँचाने के लिए नहीं, जिम्मेदारी से इस्तेमाल करना सीखो।"

युवराज ने उपकरण लिया। उसकी उँगलियाँ काँप रही थीं।

वीर ने एक कदम आगे बढ़ाया।

"आज दोपहर मैंने दर्द का अभिनय किया। इसलिए नहीं कि मैं तुमसे डरता था। इसलिए कि मेरे मित्रों के सामने कोई तमाशा नहीं चाहता था। ईशा घबरा गई थी। आरव मुझे चिकित्सा कक्ष ले गया। तुमने यह सब देखा होगा।"

युवराज ने नजरें झुका लीं।

“लेकिन यदि वही प्रहार ईशा को लगता? यदि वहाँ खड़े किसी दूसरे विद्यार्थी को लगता? तुमने यह सोचा भी था?”

“मैं सिर्फ—”

“तुम सिर्फ अपनी जिज्ञासा मिटाना चाहते थे,” वीर ने उसकी बात काट दी। “उसके लिए किसी की जान जोखिम में डाल दी।”

कुछ क्षण तक दोनों के बीच केवल हवा की आवाज थी।

वीर ने संयमित, पर कठोर स्वर में कहा—

“आज के बाद मेरे दोस्तों के सामने, या कभी किसी निर्दोष इंसान के साथ, ऐसी हरकत दोबारा की तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।”

युवराज ने वीर की आँखों में देखा। उसे पहली बार समझ आया कि सामने खड़ा लड़का उसे डराने के लिए ऊँची आवाज नहीं कर रहा। वह सचमुच जो कह रहा है, उसके लिए तैयार है।

वीर पीछे हटा। “मुझे तुमसे लड़ाई नहीं चाहिए। अपना रास्ता चुनो और हमें अपने रास्ते पर चलने दो।”

वह मुड़ा और आगे बढ़ गया।

युवराज ने उसे रोकना चाहा, लेकिन शब्द गले में अटक गए। उसकी आँखों के सामने दो दृश्य थे—दिन में दर्द से गिरा वीर, और रात में बिना हिले बिजली सहता वही वीर। कौन-सा चेहरा असली था? या दोनों ही असली थे और वह अब तक उसे समझ ही नहीं पाया था?

वीर के जाने के बाद युवराज ने अपना नियंत्रक जाँचा। उसने दूर पड़े धातु के एक टुकड़े पर बहुत कम क्षमता से प्रहार किया। चिंगारी उठी। उपकरण बिल्कुल ठीक था।

तो गलती मशीन की नहीं थी।

उसने अपनी कलाई देखी, जहाँ वीर की पकड़ का हल्का निशान था। वह सोचने लगा—इतनी महँगी शक्ति का उस पर कोई असर नहीं हुआ। उसने न कवच पहना था, न कोई सुरक्षा-उपकरण। और एक ही झटके में उसने मुझे गिरा दिया।

उसे याद आया कि वीर कैंटीन में किस तरह हँसता है, ईशा से मजाक करता है और आरव के साथ साधारण विद्यार्थी की तरह घूमता है।

“यह लड़का आखिर है कौन?” उसके मुँह से निकला।

कार का दरवाजा खोलते हुए वह अनायास पीछे मुड़ा। सड़क खाली थी, फिर भी उसे लगा जैसे वह सुरक्षित नहीं है। पहली बार उसके मन में यह विचार आया कि जिस व्यक्ति को वह कमजोर समझकर परख रहा था, वह उसकी पहुँच से बाहर हो सकता है।

उसने कार चालू की, लेकिन तुरंत आगे नहीं बढ़ा।

“और अगर वीर के पास इतनी शक्ति है...”

आरव, काव्या और ईशा के चेहरे उसकी आँखों के सामने उभरे।

“तो क्या उन्हें इसके बारे में पता है?”

दिन में वे सचमुच चौंके थे। शायद नहीं। फिर एक दूसरा प्रश्न उठा—क्या वे भी कुछ छिपा रहे हैं?

युवराज ने सिर झटक दिया। उसके पास किसी प्रश्न का उत्तर नहीं था। पहली बार उसे यह भी समझ नहीं आ रहा था कि अगला कदम क्या होना चाहिए।

वीर घर पहुँचा तो ईशा का संदेश फिर आया—“अब तो पहुँच गए?”

उसने उत्तर लिखा—“हाँ। रास्ते में एक जिद्दी आदमी मिल गया था।”

“तुमसे भी ज्यादा?”

“बहुत ज्यादा।”

“फिर बहस की होगी।”

वीर ने कुछ देर स्क्रीन देखी। “नहीं। आज केवल समझाया है।”

ईशा ने हँसने वाला चिह्न भेजा और लिखा—“कल मिलते हैं। आराम करना।”

वीर ने मोबाइल रख दिया। उसके मन में जीत का उत्साह नहीं था। उसे युवराज की आँखों में दिखा भय याद आ रहा था। वह जानता था कि डर कभी-कभी किसी को रोक देता है, और कभी उसे पहले से अधिक खतरनाक बना देता है।

उसने खिड़की से बाहर देखा। फिर अपनी हथेली की ओर। उस पर कोई निशान नहीं था।

“बस अब किसी और को चोट मत पहुँचाना,” उसने धीमे स्वर में कहा।

कमरे की बत्ती बुझ गई।

अगली सुबह कॉलेज में वीर फिर हँसता दिखाई देगा। ईशा उसे देर से आने पर टोकेगी, काव्या उसकी बातों पर मुस्कुराएगी और आरव उसके साथ चाय पिएगा। उनके लिए वह वही पुराना मित्र होगा।

लेकिन युवराज के लिए अब वीर की हर मुस्कान के पीछे एक प्रश्न खड़ा रहेगा—जिस शक्ति को उसने धन से खरीदा था, वह इस लड़के के सामने बेअसर कैसे हो गई?

और उससे भी बड़ा प्रश्न—यदि यह साधारण दिखने वाला वीर नहीं है, तो फिर वह है कौन?

अध्याय 10 समाप्त।